आलस्य और अलबेलापन - 68

अव्यक्त बापदादा :- (09.03.2009)

➳ _ ➳ माया अलग करके फिर पुराने संस्कर को इमर्ज करती हैं और पुराने संस्कार इमर्ज हो जाते हैं तो शुद्ध संस्कार मर्ज हो जाते हैं। पुराने संस्कार है अलबेलेपन और आलस्य, यह भिन्न-भिन्न रूप में इमर्ज होने से कम्बाइन्ड रूप अलग हो जाता हैं। माया के अनेक स्वरूपों को तो जान गये हो ना! वह चतुराई से अपना रंग लगा देती हैं। अलग होना अर्थात माया के रंग में रंगना। यह अलबेलापन, आलस्य बहुत भिन्न-भिन्न रूप से आता है। उसको पहचानने के लिए माया अपने तरफ आकर्षित कर देती हैं और बच्चे भी यह अलबेलापन और अलस्य जो रावण का खजाना है, यह बाप का खजाना नहीं है, रावण के खजाने को बड़े नशे से कहते हैं कि मैं चाहता नहीं हूँ, चाहती नहीं हूँ लेकिन मेरा संस्कार है। संस्कार मेरा कहने लगते हैं।

➳ _ ➳ क्या यह परमात्म खजाना हैं? या रावण का खजाना हैं? उसको मेरा संस्कार कहना सोची, राइट हैं? मेरा बना देना, यह माया की चतुराई है। बाप का खजाना प्यारा है या यह रावण का खजाना प्यारा है? कॉमन रीति से बच्चे अपने को छुड़ाने के लिए कह देते हैं मेरा संस्कार है, चाहती नहीं हूँ तो सोचो क्या यह मेरा है। बाप कहते हैं कि रावण के खजाने को अपना बनाने से धीरे-धीरे जो शुभ संस्कार हैं वह समाप्त हो जाते हैं। परमात्म संग का रंग ढीला होता जाता हैं और माया का रंग इमर्ज हो जाता हैं।

➳ _ ➳ कभी अलबेलापन, कभी रॉयल आलस्य, आलस्य के बहुत भिन्न-भिन्न प्रकार हैं। कभी इस पर क्लास करना। आलस्य कितने प्रकार के हैं और कितने रॉयल रूप से आते हैं। बापदादा सारे दिन में गे गे के गीत बहुत सुनते हैं। करेंगे, दिखायेंगे, बनेंगे, लेकिन स्पीड़ क्या है? गे गे वाले बाप के साथ चलेंगे? बाप तो एवररेडी हैं और गे गे वाले एवररेडी तो नहीं हुएतो बाप के साथ कैसे चलेंगे?

➢➢ <u>आत्मा के आदि अनादी संस्कार जब छिप जाते हैं, तब विकर्म होते हैं...</u>

➳_ ➳ आत्मा के आदि अनादि स्वरूप में स्थित रहना है...

→ संकल्प स्वप्न में भी देह भान का मैं पन नहीं हो...

➢➢ माया अर्थात विकार के संकल्प...

➳_ ➳ माया के खजाने को अपना बनाने से परमात्म संग का रंग ढीला होने लगता है...

→ परमात्म ज्ञान को, परमात्म खजानों को एमर्ज रखना है...

■ संगम युग, परमात्म मिलन, परमात्म प्राप्तियां, दैवी मिलन... ऐसा मिलन संसार में कहीं नहीं कि स्वयम भगवान् सामने है...

▶ स्वयम भगवान् हमें मिले है..

▶ उसने हमें खोज लिया है...

➢➢ प्रभु मिलन की तैयारी

➳_ ➳ प्रभु मिलन की तैयारी अमृतवेला से ही शुरू हो..

➳_ ➳ सारे दिन भाग्य का चिन्तन...

→ मौन के बिना प्रभु मिलन का अनुभव नहीं हो सकता...अव्यक्त स्थिति बनानी है...

→डिजिटल मीडिया से थोडा दूर..

➳_ ➳ सारा दिन बाबा का आह्वान करते रहना...

➳_ ➳ शांतिवन के उपर जाकर सकाश देना...

→ प्रभु मिलन के सभी आत्माओं को सर्व श्रेष्ठ अनुभव हो जाएँ...

➳_ ➳ बाबा को बार बार निमंत्रण देना...

➳_ ➳ शाम से सेवा, कारोबार से जितना हो सके, छुट्टी...

➳_ ➳ स्वयम को प्रभु प्रेम से भर देना...

→ पूरे दिन प्रभु मिलन के अनुभव होते रहें..

→ कि वह मिलन अभी भी हो रहा है...

➳_ ➳ ज्ञान के साहित्य का अध्ययन करते रहना...

➳_ ➳ मुरलियों का अध्ययन, मनन, चिंतन, रिवाइज करना...

➳_ ➳ प्रभु मिलन की क्लासेज सुनना...

➳_ ➳ बाबा के नाम प्यार भरा पात्र लिखना...

→ उसने हम पर क्या क्या उपकार किये हैं...

→ कैसे एक एक बन्धनों से छुड़ाया...

→ कैसे सभी बोझ से मुक्त किया...

➳_ ➳ स्वयम को व्यक्त भाव में कम से कम लाना...

➳_ ➳ एकांत का अनुभव

→ जितना हो सके, बात चीत कम से कम हो...

➳_ ➳ अपने प्रभु मिलन का पहला मिलन, बचपन के दिन याद करना...

→ <u>मन को एकाग्र करने की विधि है... अपने ही जीवन का अवलोकन करना...</u>

→ जिस दिन से ज्ञान मिला... उन अनुभूतियोंको याद करना और उसमें खो जाना...

- तभी सुंदर अनुभव कर पाएंगे...

➳_ ➳ अव्यक्त बापदादा से मिलने के लिए स्थिति भी अव्यक्त चाहिए...

→ स्थिति श्रेष्ट है तो गहन अनुभव होंगे...

➳_ ➳ उसके साक्षीपन को हम साक्षी होकर देखें...

→ उसके बोल, दृष्टि का रस लेना...

→ केवल मेरे लिए ही वह आ रहा है...